महाराणा प्रताप की अन्तिम व अधूरी इच्छाः

बादशाह अकबर के सिने में मेवाड के राणा प्रताप कॉटे की तरह चुभ रहे थे

। उनको रात को नींद भी नहीं आती थी कि वह किस धातू का बना है जिसे मेरी इतनी बड़ी फौज़ भी हल्दीघाटी के जंग में न हरा सकी और न मौत के घाट उतार सकी। मिर्जा राजा मानसिंह बड़ी ताल ठोक कर व मुछों पर ताव दे कर मेरी एक लाख की फ़ौज इस वादे पर लेकर गये थे कि राणा आपके दरबार में कैदी की हैसियत में नाक रगड़ता पेश किया जायेगा।

राणा प्रताप की यह मजबूरी थी कि उनका वफादार घोड़ा चेतक अपनी तीन टॉगों पर दौड़ता भागता उनको युद्ध नहीं जीता सकता था और उनके सेनापती के आग्रह पर उनको रणस्थिली छोड़नी पड़ी। मानसिंह खाली हाथ लौट आया और वो मारे शर्म के कई महिनों तक अपने बहनोई अकबर के सामने नहीं गये और बिमारी का बाहाना बना कर जयपुर में ही पड़े रहे और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

हल्दीघाटी के युद्ध में राणा के सैनिकों की संख्या लगभग पन्द्राह हजार रही होगी अधिकांश लड़ते लड़ते वीर गति को प्राप्त हो गये और जो बाकि बचे वो मौत के घाट उतार दिये गये। अब उनके पास न तो सैन्य शक्ति थी और न सेना जुटाने की धन राशि थी। पर उनके हौसलें बुलन्द थे उनको जंगलों में